पीपुल्स समाचार, भोपाल 28 OCT 2010

टंट्या के वनवासी गौरव में वृद्धि

स्वाति तिवारी

प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान ने अब तक अपनी विकास यात्राओं को अलग-अलग आयामों से कभी खेत-खलिहानों में किसानों से जोड़ा, तो कभी गांव चौपालों में ग्रामीण जनता से। इस बार उनकी विकास यात्रा 28 अक्टूबर 2010 से इसी एक चौथाई आबादी वाले आदिवासियों से जुड़कर वनवासी सम्मान यात्रा के रूप में फिर आगे गतिमान होगी। वनवासी सम्मान यात्रा का शुभारंभ खंडवा यानी पूर्वी निमाड़ की उस भूमि से होगा जहां रॉबिन हुड के नाम से प्रसिद्ध हुए क्रांतिकारी टंट्या भील का जन्म हुआ था।

मप्र की अनुसूचित जनजातियों व वनवासियों के सम्मान में उनके समग्र विकास के उद्देश्य से मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान पूर्वी निमाड़ के पंधाना तहसील के खालवा विकासखंड के ग्राम बड़दा से वनवासी सम्मान यात्रा की शुरुआत करने जा रहे हैं। यात्रा का प्रथम चरण वनवासी क्षेत्र के एक सौ इक्कीस वर्ष पूर्व देश के इतिहास क्षितिज पर बारह वर्षों तक सतत जगमगाते रहे क्रांतिकारी टंट्या भील को समर्पित है, जो जनजाति के गौरव हैं। वे एक ऐसे जननायक हैं जो वनवासियों के अदम्य साहस, चमत्कारी स्फूर्ति और संगठन शक्ति के प्रतीक हैं। एक ऐसा आदिवासी जननायक, जिसे अंग्रेज सरकार 'इंडियन रॉबिनहुड' (जननायक) कहती थी।

अनुसूचित जनजातियों के सम्मान में शुरू हो रही वनवासी सम्मान यात्रा द्वारा इनके विकास का एक नया वृतांत लिखा जाए।

छापामार युद्ध कौशल, अचूक निशानेबाज भीलों की पारंपरिक धनुर्विद्या में निपुण, जेल के सींखचों को तोड़कर भाग जाने में समर्थ टंट्या का जीवन जंगल, घाटह, अरण्य बीहड़ों व पर्वतों में अंग्रेजों और होल्कर राज्य की शक्तिशाली सेना से लोहा लेते हुए बीता। अंग्रेजों ने इस जननायक को जनविद्रोह के डर से कब व किस तारीख को फांसी की सजा दी यह गुप्त रखा था। उन्हीं क्रांतिकारी वनवासी जननायक को प्रणाम करती वनवासी सम्मान यात्रा की रेल उनके जन्म स्थल से चलेगी, जो प्रथम चरण में निमाड़ से चार जिलों खंडवा, बुरहानपुर, खरगौन व बड़वानी में पड़ाव डालेगी। वहां मुख्यमंत्री इन जिलों के आदिवासी बहुल गांव में रात्रि विश्राम भी करने वाले हैं।

हिन्दुस्तान के नक्शे में विन्ध्य व सतपुड़ा के बीच बसा भूभाग निमाड़ के नाम से प्रसिद्ध है। इसी निमाड़ के वनवासी टंट्या ने आदिवासियों को एकत्र कर क्रांति का बिगुल बजाया था। मप्र की अनुसूचित जनजातियों एवं वनवासियों के सम्मान में उनके समग्र विकास के उद्देश्य से मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान खंडवा से प्रदेश की आदिवासी अंचलों के सर्वांगीण विकास का बिगुल बजाने जा रहे हैं, जिसके उद्घोष से निकलेगी प्रदेश के विकास में समुदाय की सक्रिय सहभागिता, प्रदेश में वन अधिकार अधिनियम का प्रभावी क्रियान्वयन, शिकायतों और समस्याओं का त्वरित निराकरण और अनुसूचित जनजाति के हितग्राहियों को शासन की विभिन्न योजनाओं का समुचित लाभ सुनिश्चित किए जाने के प्रयास की स्वर लहरी। निमाड़ की अपनी अलग पहचान है, एक संस्कृति जो नर्मदा के किनारे-किनारे विकसित हुई। इसका इतिहास समृद्ध है। यहां पुरापाषाण युगीन आदिम सभ्यता एवं प्रस्तर युगीन प्रमाण आज भी मौजूद हैं। पौराणिक गाथाओं में ओंकार मान्धाता ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग भी है और असीरगढ़ के जंगलों में भटकते अश्वत्थामा की कथाएं भी। आज फिर एक नया वृतांत आदिवासी, जनजातीय, वनवासी सम्मान यात्रा के रूप में लिखा जाए जो बरसों-बरस वनवासियों को विकास के पथ पर सम्मान देता रहे। यात्रा अपने उद्देश्य में तीर्थ यात्रा में बदल जाए, क्या यह हो सकता है? ऐसा हो यही मंगल कामना है।